

चांदी की वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबंध

* 83. श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री :
श्री निहाल सिंह :

क्या वाणिज्य मंत्री यह बातने :
की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश में लगभग पचास हजार स्वर्णकार तथा कारीगर चांदी के अभूषणों तथा चांदी की अन्य वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबंध के कारण बेकार बठे हैं ;

(ख) क्या देश को इस प्रतिबंध के कारण प्रति वर्ष लाखों रुपये की विदेशी मुद्रा की हानि उठानी पड़ेगी ; और

(ग) यदि हां, तो सरकार का विचार चांदी की वस्तुओं के निर्यात पर नै यह प्रतिबंध कब तक हटाने का है ?

THE MINISTER OF STATE IN THE
MINISTRY OF COMMERCE (SHRI-
MATI RAM DULARI SINHA): (a)
The export policy for manufactures and
products, having silver as an ingredient,
is sufficiently liberal since 4-6-81 to per-
mit export of silver jewellery and other
silver articles.

(b) and (c). Do not arise.

श्री राज नाथ सोनकर शास्त्री :
अध्यक्ष महोदय, मने तो यह सोचना था
कि नया मंत्री मंडल बना है और इस
नये मंत्री मंडल के बनने के बाद जवाब बड़ी
गंभीरता के साथ नये ढंग से दिया जाएगा
लेकिन इन्होंने वही पुरानी परिपाटी दोहराई
है। हमारा प्रश्न जो है, उसका जवाब
बिल्कुल नहीं आ रहा है। आप कृपया
इस को देखें। हमारा प्रश्न स्पष्ट रूप
से यह है कि देश में लगभग पचास
हजार स्वर्णकार तथा कारीगर चांदी के

आभूषणों तथा चांदी की अन्य वस्तुओं के
निर्यात पर प्रतिबंध के कारण बेकार
हैं और यहां इस का उत्तर न देकर
यह कहा गया है कि निर्यात नीति
4-6-81 से काफी उदार बना दी है। मैं
नीति नहीं पूछ रहा हूं, मैं पूछ रहा हूं
कि क्या चांदी का धंधा करने वाले 50
हजार कारीगर इस समय बेकार हैं? जितना
मैंने पूछा है, उसी के अनुसार आप....

अध्यक्ष महोदय : आप अन्दाजा क्यों
नहीं लगा सकते ?

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मैं क्या
अन्दाजा लगाऊं ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मनलव
यह कि बेकार हुए हैं लोग।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : सर
यहां पर बुलियन मार्किट है। श्री कृष्ण
गोयल उसके सेक्रेटरी हैं। उन्होंने सरकार
को एक पत्र लिखा था कि चार सौ करोड़
रुपये का प्रतिवर्ष चांदी का निर्यात नहोने
से विदेशी मुद्रा की हानि हो रही है।
मैं समझता हूं कि उसी रेफरेंस में उन्होंने
एक और कोटेशन दिया है कि 31 सौ
रुपये प्रति किलो चांदी यहां बिकती है
और 56 सौ रुपये बाहर बिकती है,
इसलिए चांदी के निर्यात को जारी रखा
जाए। उन्होंने एक आवेदन पत्र दिया था
और मैं समझता हूं कि उसी आवेदन-पत्र
के अनुसार आपने 1980-81 से चांदी
के निर्यात की नीति को उदार बनाया
है। मैं मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा
आपने जो नीति उदार बनायी है, उस
उदार नीति के अनुसार कितनी चांदी
विदेशों को भेजी जा चुकी है ?

श्रीमती राम दुलारी सिन्हा : जहां
तक इस इंडस्ट्री में 50 हजार लोगों के
अनएम्प्लॉयमेंट का सवाल है, उसके

संबंध में मैं इतना नहीं कहना चाहूंगी कि यह एक हाइली डिसेन्ट्रेलाइज्ड इंडस्ट्री है, इसलिए उसकी फिगर्स हमारे पास नहीं हैं। इसलिए माननीय सदस्य को मेरे ऊपर नाराज नहीं होना चाहिए। (व्यवधान)

सर 79-80 में करीब करीब चार लाख परसंज आल इंडिया हेन्डीक्राफ्ट्स बोर्ड के अनुसार इस क्षेत्र में एम्प्लाएड थे। इन फिगर्स में आर्टिजंस, डायमण्ड और गोल्ड ज्वैलरी सेक्टर में काम करने वाले लोग भी शामिल हैं।

जहां तक माननीय सदस्य ने चांदी के निर्यात की बात कही है, मैं उनसे कहना चाहती हूँ कि चांदी के निर्यात पर स्ट्रिक्टली बैन है। अगर चांदी की ज्वेलरी से उनके प्रश्न का मतलब हो तो उस मिलसिले में मैं कहना चाहती हूँ कि 1978-79 के मुकाबले में सिल्वर ज्वैलरी का एक्सपोर्ट घटा नहीं है। जहां 1978-79 में यह एक्सपोर्ट 81 लाख का था, वहां 1979-80 में 113 लाख, 1980-81 में 140 लाख, 1981-82 में 168 लाख और 1982-83 वर्ष में अप्रैल से जनवरी तक 142 लाख रुपये का हुआ।

I think, the hon. Member is now satisfied with my reply.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : सर, मेरा दूसरा प्रश्न है कि यहां के नवभारत टाइम्स और पंजाब केसरी दोनों अखबारों में एक हफ्ते का विवरण निकला हुआ है। इसमें लिखा है कि आजादी के बाद 35 वर्षों में पहली बार साढ़े तीन करोड़ रुपये की चांदी की चार सौ सिल्लियां जो कि विदेश भजी जा रही थीं, अभी अभी पकड़ी गयीं और 72 सिल्लियां जो लगभग एक करोड़ रुपये की थीं, जो कि अभी अभी विदेश भजी जा रही थीं, अहमदाबाद

में पकड़ी गयीं। 19 से लेकर 23 तारीख तक के नवभारत टाइम्स और पंजाब केसरी अखबारों में यह रिपोर्ट छपी है।

इसके साथ ही साथ यह सूचना मिली है कि करीब एक करोड़ रुपये की चांदी प्रतिदिन तस्करी से पाकिस्तान भजी जा रही है और दूसरे स्थानों पर भेजी जा रही है। इतना ही नहीं, अमेरिका में जहां चांदी का सबसे ऊंचा मार्केट है यहां से चौगुना और पांच गुना मूल्य पर वहां चांदी बिक रही है वहां पर भी तस्करी हो रही है। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपने अमृतसर, जोधपुर और अहमदाबाद आदि स्थानों से जो तस्करी हो रही है, उस भारी तस्करी को रोकने के लिए आपने क्या उपाय किये हैं? इसके अलावा अब तक जो दो तस्करियां हैं, जिनकी सूचना मिली है, इनके संबंध में क्या कार्यवाही कर रहे हैं?

एक बात और जानना चाहता हूँ कि प्रायः चांदी गरीबों के यहां से आती है। अधिकतर शेड्यूल कास्ट, ट्राइब्स और गरीब किसानों की औरतें पहनती हैं। उनके यहां से चांदी आकर मार्केट में बिक रही है। हमको सूचना मिली है कि दिल्ली में एक करोड़ रुपये की चांदी प्रति दिन बिक रही है। तो क्या आप चांदी के निर्यात पर और इस प्रकार की बिक्री पर कुछ प्रतिबंध लगाने के बारे में सोच रहे हैं, ताकि चांदी विदेशों में न जाए और तस्कर लोग पकड़े जाएं।

श्री मती राम दुलारी सिन्हा : जैसा कि मैंने पहले ही कहा है कि चांदी का

निर्यात बंद है। जहां तक माननीय सदस्य की रिपोर्ट्स का सवाल है

The matter has not come to me earlier. That will be looked into. That much I can say.

But smuggling is not my subject!

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Smuggling is the subject of Shri Pranab Mukherjee!

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE): That is my subject!

श्री निहाल सिंह : चांदी की वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाने के कारण दोहरी नुकसान है। एक तो चांदी के आभूषण बनाने वाले कारीगर बेकार हो रहे हैं। उनकी रोजी-रोटी का सवाल है, भूखें मर रहे हैं। दूसरा नुकसान यह है कि अंतर्राष्ट्रीय कीमत ज्यादा है। जब किसी चीज की कीमत बाहर ज्यादा होती है तो उसकी तस्करी शुरू हो जाती है। गत वर्ष का अनुमान है कि एक हजार टन चांदी का निर्यात तस्करी द्वारा हुआ। तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या आप उन कारीगरों की भलाई के लिए और तस्करी रोकने के लिए इस प्रतिबंध को हटाने पर विचार करेंगे ?

SHRIMATI RAM DULARI SINHA: I have already stated in my earlier reply that exports of silver jewellery are still being made and are being encouraged.

Exporters of Silver Jewellery were under the obligation to import silver against the export of jewellery or other articles of silver within one month but this was discontinued in June, 1981.

As regards illegal exports, I have already clarified the position. That will be looked into.

Decline in Jute goods exports

+

*84. SHRI B. D. SINGH:

SHRI RAJESH KUMAR SINGH: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether there has been considerable decline in the jute goods exports during 1982;

(b) if so, what is the extent of fall in the export of jute goods during 1982 in terms of quantity and value in foreign exchange;

(c) what are the main factors responsible for the decline in the export of jute goods; and

(d) what steps have been taken by Government to step up its exports?

THE MINISTER OF COMMERCE AND OF THE DEPARTMENT OF SUPPLY (SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH): (a) to (d). A statement is laid on the Table of the House.

Statement

Export of jute goods declined from a level of 463.7 thousand tonnes valued at Rs. 367.28 crores in the calendar year 1980 to 338.6 thousand tonnes valued at Rs. 200 crores in the corresponding period in 1982. Export during the calendar year 1981 was 451.6 thousand tonnes valued at Rs. 278.29 crores.

2. Overseas demand for Indian jute goods has shrunk on account of prolonged recession in developed countries coupled with higher mortgage interest rates and high cost of inventory build up. Besides there is also a trend in the developed countries to attain self-sufficiency in packaging material by encouragement of locally produced synthetic substitutes. Besides acute competition from synthetic substitutes, there is also fierce under-selling by major jute producing countries particularly Bangladesh which has been increasing its share of exports at the cost of India.